व्यवहारिक शिक्षा से होगा मूल्यों का उत्थान
ब्रह्माकुमारी संगठन में शिक्षाविद्ों का सम्मेलन आरंभ

माउंट आबू, 30 मई। दिल्ली उपमुज्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा है कि समाज में मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए मूल्य आधारित शैक्षणिक पाठयक्रमों की व्यवहारिक शिक्षा पर जोर देना समय और परिस्थितियों की बलवती मांग है। वे शनिवार को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर में शिक्षा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम युग के लिए दिव्य ज्ञान विषय पर आयोजित सम्मेलन के उदघाटन सत्र को संबोधित कर रह थे।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ स्कूलों, कालेजों व विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर डिग्री प्राप्त करना ही नहीं है बल्कि जरूरत इस बात की है कि लोगों में जनजागृति लाकर उन्हें जीवन का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए। मूल्यों की गिरावट के माहौल में मनुष्य अपनी पहचान कैसे बरकरार रखे इस पर गहन चिंतन की जरूरत है।

ज्ञान सरोवर निदेशिका डॉ. निर्मला ने कहा कि नई पीढ़ी के उत्थान के लिए शिक्षकों को स्वयं में मूल्यों का समावेश करने के साथ निजि व सामूहिक तौर पर चिंतन करने की जरूरत है। कोटा वर्धमान महावीर ओपन युनिवर्सिटी कुलपति डॉ. विनय कुमार पाठक ने कहा कि मूल्यविहीन शिक्षा स्वयं ही अर्थ विहीन हो जाती है। शिक्षाविद ब्रह्माकुमारी संगठन से स्वयं में ऐसा आध्यात्मिक निखार लेकर जाएं जिससे वे समाज को नई दिशा देने में अहम जूमिका अदा कर सकें। शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष बी के मृत्युजंय ने कहा कि विश्वविद्यालयों के सामुहिक प्रयासों से मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर हर संभव बल दिया जाना आवश्यक है। आरईआरएफ दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम निदेशक डॉ. पण्डयमणि ने कहा कि ज्ञान वही श्रेष्ठ होता है जो हमारे चरित्र को श्रेष्ठ बनाता है, मन को श्रेष्ठ व पवित्र बनाता है, जीवन को दिव्य बनाता है। समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करे। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हरीश शु ला ने कहा कि ईश्वर के सत्य ज्ञान में ही शक्ति है। राजयोग के जरिए ज्ञान को आचरण में लाने पर जीवन में प्रेम, शांति, सहयोग, ईमानदारी, सम्मान, करूणा ,दया आदि विभिन्न मूल्यों का समावेश होता है। सम्मेलन के उदघाटन सत्र को वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका मंजू बहन, बी. के. सुदेश आदि ने भी संबोधित किया।

केवल भौतिकता पर आधारित न हो शिक्षा
ब्रह्माकुमारी संगठन में शिक्षाविदों का सम्मेलन

माउंट आबू। 31 मई। ओडिशा कटक युनिवर्सिटी कुलपति डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था भौतिकता पर आधारित हो गई है। हमारे विद्यार्थी जीवन की सच्चाई का सामना करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं। परिवार में आपसी सामजस्य का अभाव भी संस्कारित शिक्षा में बाधा पैदा करता है। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर में अकादमी परिसर में शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में शिक्षाविदों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ ही है अच्छे या बुरे का भेद कर पाना। हमारे लिए या आवश्यक व उचित है यह शिक्षा के माध्यम से ही समझा जा सकता है। शिक्षा व्यवसाय का रूप लेती जा रही है। प्राचीन गुरुकुल परम्परा जो गुरु शिष्य के सम्बन्ध को आजीवन बनाए रखता थी वह प्रायः लुप्त होती जा रही है। शिक्षा का अधिकार तो मिला लेकिन संस्कारों को अधिकार में रखना इसमें कमी आती जा रही है। असमानता से समाज में अनेक प्रकार की विसंगति पैदा हो गई हैं।

गुजरात भुज क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्णा वर्मा कच्छ युनिवर्सिटी कुलपति प्रो. डॉ. बी. एस. पटेल ने कहा कि विद्यार्थियों को संस्कारवान बनाना शिक्षक से ज्यादा अभिभावकों की जिम्मेवारी होती है। राष्ट्रहित में कार्य करने वाले शिक्षकों को देश के भावी कर्णदारों को शिक्षा की बारीकियों से गढ़ने के लिए अपने सिद्वांतों से किसी प्रकार का भी समझौता नहीं करना चाहिए।

भुवनेश्वर उत्कल युनिवर्सिटी पूर्व कुलपति प्रो. विनायक रथ ने कहा कि बौद्धिक शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा को भी पूरा महत्व देने से समाज को नई दिशा दी सकेगी। प्रायः देखा गया है कि केवल बौद्धिक शिक्षा को प्राथमिकता देने से ही सामाजिक व पारिवारिक ढांचा अव्यवस्थित हो रहा है। सामाजिक रिश्तों में दूरियां बढ़ती जा रही हैं।

प्रभाग सचिव बी. के. मृत्युजंय ने कहा कि सच्चाई व धर्म की राह पर चलने से ही जीवन चरित्रवान बनता है। शिक्षा एक शक्ति है जो जीवन को मंजिल पर पहुंचाने में निर्धारित मार्गों का अनुसरण करने का रास्ता दिखाती है। शिक्षक ही समाज को मूल्यों से सिंचित करता है। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हरीश शु ला ने कहा कि संस्कारवान शिक्षा से विद्यार्थियों में ही अपने दायित्वों को लेकर ईमानदारी व कर्त्तव्यपरायणता बढ़ेगी। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को शिक्षक और अभिभावक में समुचित सामजस्य होना जरूरी है। प्रभाग की मुज्यालय संयोजिका बी. के. शीलू बहन ने कहा कि देश में एज्युकेशन का स्तर बढ़ने के बावजूद भी नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। प्रभाग संयोजक डॉ. आर.पी. गुप्ता ने कहा कि पारिवारिक शिक्षा का ह्रास हो रहा है। केवल माता और पिता ही पारिवारिक शिक्षा से संबंधों में मधुरतापूर्वक सम्मान की भावना स्थापित कर सकते हैं। कार्यक्रम को बी. के. सुमन बहन, डॉ. पण्डयामणि ने भी संबोधित किया।